चेतन कुमार

मैं 20 की वो 40 के



एक अनोखी प्रेम कहानी

में 20 की वो 40 के

लेखक: चेतन कुमार

अस्वीकरण

यह पुस्तक एक रोमांटिक और भावनात्मक प्रेम कहानी है। इसमें कुछ दृश्य वयस्कों के आपसी प्रेम और रोमांस से जुड़े हो सकते हैं। इस पुस्तक में वर्णित सभी पात्र, स्थान, घटनाएँ और संवाद पूरी तरह से काल्पनिक हैं। इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, वास्तविक घटना या स्थान से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई समानता पाई जाती है, तो वह केवल एक सुखद संयोग मात्र होगी।

कॉपीराइट © 2026 चेतन कुमार. ऑल राइट्स रिजर्व्ह

1

सुबह के ठीक साढ़े आठ बजे थे। धूप अभी हल्की थी और मोहल्ले की पक्की सड़क पर चहल-पहल शुरू हो चुकी थी।

20 साल की बिंदिया रोज़ की तरह कंधे पर कॉलेज का बैग संभाले, हाथों में किताबें लिए सधी चाल से आगे बढ़ रही थी। बचपन का अल्हड़पन उसके चेहरे पर था, पर आँखों में गहरी शालीनता।

तभी सामने वाले बँगले का भारी लोहे का फाटक खुला और सतीश की मर्सिडीज़ बाहर निकली।

सतीश, चालीस बरस का एक संजीदा और कामयाब बिजनेसमैन। सफेद कमीज़, कलाई पर बंधी घड़ी और चेहरे पर हमेशा बना रहने वाला एक औपचारिक ठहराव।

गाड़ी धीमी हुई और सतीश की नज़र सड़क पर चल रही बिंदिया पर पड़ी। दोनों की नज़रें मिलीं।

न कोई लंबी ख़ामोशी, न कोई इज़हार। बस एक मोहल्ले की औपचारिकता के नाते सतीश ने सिर हिलाकर अभिवादन किया।

बिंदिया ने भी पलकें झुकाते हुए एक हल्की मुस्कान के साथ सिर झुका दिया।

2

सतीश ने कार की गति बढ़ाई और मुख्य सड़क की ओर मुड़ गया।

कार के शीशे चढ़े हुए थे और अंदर हल्की ठंडक थी, लेकिन उस एक पल की नज़र ने उसके भीतर एक अजीब सी हलचल छेड़ दी थी। उसने खुद को टोकते हुए एक फीकी मुस्कान के साथ सिर झटका। यह उम्र का फासला था, जिसका सलीका वह बखूबी जानता था। बीस मिनट बाद उसकी गाड़ी 'रॉयल प्लाज़ा' के सामने आकर रुकी।

यह चार मंज़िला आलीशान कॉम्प्लेक्स सतीश की सालो की कड़ी मेहनत का नतीजा था, जहाँ कपड़ों से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स तक हर सामान उपलब्ध था।

काउंसलर डेस्क के पीछे से नंदिनी तुरंत अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

35 साल की नंदिनी। हल्के बादामी रंग की सूती साड़ी, करीने से बंधे बाल और चेहरे पर वही शांत, समर्पित भाव जो पिछले दस सालों से सतीश की हर ज़रूरत को बिना कहे समझ लेता था। उसके हाथ में सतीश की वही कम चीनी वाली अदरक की पसंदीदा गर्म चाय थी।

3

नंदिनी ने अभी तक शादी नहीं की थी। वह अपने घर में चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। घर की ज़िम्मेदारियों और भाई-बहनों का जीवन संवारते-संवारते वह खुद अकेली रह गई थी।

हालाँकि सतीश के लिए उसके मन में एक गहरा आकर्षण या शायद प्रेम था। शादी तो सतीश ने भी नहीं की थी। अपने बिज़नेस के सपनों को पूरा करते-करते वह कब चालीस का हो गया, उसे खुद पता ही नहीं चला।

"शुभ प्रभात, सतीश सर," नंदिनी ने आगे बढ़कर चाय की प्याली टेबल पर रखते हुए कहा।

सतीश ने एक हल्की मुस्कान के साथ चाय का घूंट भरा और पूछा, "आज के क्या शेड्यूल्स हैं, नंदिनी?"

"तीसरे माले के इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्शन का नया स्टॉक आ चुका है," नंदिनी ने अपनी डायरी खोलते हुए सधे स्वर में बताया, "और शाम को चार बजे टेक्सटाइल सप्लायर्स के साथ मीटिंग है।"

सतीश ने सिर हिलाते हुए चाय का कप रखा और कुर्सी पर पीछे टिकते हुए कहा, "ठीक है, पहले इलेक्ट्रॉनिक्स वाला स्टॉक ही चेक कर लेते हैं।

4

हालाँकि नंदिनी थी तो सतीश के यहाँ सेल्स मैनेजर, लेकिन वह उसके पीए का काम भी संभाल लेती थी। उसे अच्छा लगता था सतीश का ख़्याल रखना, उसकी हर ज़रूरत बिना कहे पूरी करना।

सतीश भी उसकी इस निष्ठा और कार्यकुशलता की दिल से कद्र करता था। दोनों के बीच एक अनकहा तालमेल था, जिसकी बदौलत 'रॉयल प्लाज़ा' का हर विभाग घड़ी की सुइयों की तरह सटीक चलता था।

"सर, इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्शन के अलावा ग्राउंड फ्लोर के कपड़े के डिस्प्ले में भी कुछ बदलाव करने हैं," नंदिनी ने फ़ाइल पर नज़र टिकाए हुए कहा।

सतीश ने चाय की आखिरी घूंट भरी और उठ खड़ा हुआ, "बिल्कुल ठीक सोचा तुमने नंदिनी। त्योहारों का सीज़न नज़दीक है, ग्राहकों को पहले ही कदम पर कुछ नया दिखना चाहिए।"

नंदिनी ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। जब सतीश उसके किसी सुझाव की तारीफ़ करता था, तो उसका पूरा दिन संवर जाता था।

5

सतीश अपने केबिन से बाहर निकलकर लिफ्ट की तरफ बढ़ा, और नंदिनी डायरी थामे उसके पीछे-पीछे चलने लगी।

लिफ्ट के शीशे में उसने एक पल के लिए नंदिनी के चेहरे को देखा। सालों से वह इसी तरह उसके साथ खड़ी थी—बिना किसी शिकायत के, बिना किसी माँग के। सतीश के मन में उसके लिए गहरा आदर था।

लिफ्ट तीसरे फ्लोर पर रुकी।

दरवाज़ा खुलते ही इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्शन के कर्मचारियों ने झुककर सतीश का अभिवादन किया। बड़े-बड़े स्मार्ट टीवी, होम थिएटर और आधुनिक गैजेट्स से भरी यह मंजिल सतीश की दूरदर्शिता का सबूत थी।

"सर, इस तरफ का नया स्टॉक कल रात ही अनलोड हुआ है," सेक्शन मैनेजर ने आगे आकर बताया।

सतीश बारीकी से हर चीज़ का मुआयना करने लगा। काम में उसका ध्यान पूरी तरह खो जाता था, पर आज अजीब बात थी—दिन की व्यस्तता के बीच भी सुबह का वह पल रह-रहकर उसकी यादों में कौंध रहा था।

6

हालाँकि यह रोज़ की बात थी। जब वह एक साल पहले इस नए मोहल्ले में शिफ्ट हुआ था, तब उसने पहली बार बिंदिया को देखा था—बहुत प्यारी, मासूम चेहरा और आँखों में सादगी।

उसके पिता रामकिशोर जी से भी उसकी अच्छी जान-पहचान हो गई थी। दोनों अक्सर मोहल्ले के पास बने पार्क में मॉर्निंग वॉक के दौरान मिल जाते थे। कभी राजनीति पर तो कभी सामाजिक मुद्दों पर हल्की-फुल्की बातें हो जाया करती थीं।

सतीश ने अचानक अपने ख्यालों को झटका दिया और खुद को संभाला। उसने सिर हिलाकर इन विचारों को परे धकेला और दोबारा काम पर ध्यान लगाने लगा।

"सर, डिस्प्ले की यह नई अरेंजमेंट आपको कैसी लग रही है?" नंदिनी की आवाज़ ने उसे वर्तमान में खींच लिया।

सतीश ने एक गहरी सांस ली और सामने रखे एलईडी पैनल्स को देखते हुए बोला, "काफी बेहतर है, नंदिनी। बस लाइटिंग को थोड़ा और सॉफ्ट रखना ताकि स्क्रीन के कलर्स खिलकर दिखें।”

7

नंदिनी ने उसकी बात को तुरंत अपनी डायरी में नोट कर लिया। सतीश के कहे एक-एक शब्द पर अमल करना उसकी आदत में शुमार था।

दूसरी तरफ, कॉलेज के बड़े से कैंपस में बिंदिया अपनी क्लास खत्म करके लाइब्रेरी की सीढ़ियों पर बैठी थी।

सामने खुली किताबों पर उसकी उंगलियाँ टिकी थीं, पर ध्यान पढ़ाई में पूरी तरह नहीं था। सुबह की वह चंद पलों की मुलाकात एक हल्की सी उलझन बनकर उसके मन में कौंध रही थी।

सामने वाले बड़े बँगले के वह गंभीर और कामयाब सतीश जी... उनका यूँ गाड़ी धीमी करना और सिर झुकाकर एक नपा-तुला अदब दिखाना।

बिंदिया के लिए वह सिर्फ एक संजीदा पड़ोसी थे, लेकिन उस नज़रों के ठहराव में कुछ ऐसा नया था जिसने उसके अल्हड़ मन में एक अजीब सी बेचैनी जगा दी थी।

"चल बिंदिया, कैंटीन चलें?" क्लासमेट अंकिता की आवाज़ पर वह चौंक कर संभली और अपनी किताबें समेटने लगी।

8

कैंटीन की एक मेज़ पर दोनों कोल्ड कॉफ़ी के घूंट भर रही थीं। अंकिता कॉलेज के फेस्ट की बातें कर रही थी, पर बिंदिया का ध्यान थोड़ा भटका हुआ सा था।

उसने स्ट्रॉ से खेलते हुए एकदम सहज अंदाज़ में बात छेड़ी, "अच्छा अंकिता, एक बात बता... तेरे मोहल्ले में कोई नया रहने आया है हाल-फिलहाल?"

अंकिता ने हैरान होकर देखा, "नहीं तो, क्यों? तेरे यहाँ कोई आया है क्या?"

"हाँ, वही सामने वाले बड़े बँगले में... कोई सतीश जी करके आए हैं, करीब साल भर हुआ होगा," बिंदिया ने हल्के स्वर में कहा, "पापा के साथ अक्सर सुबह पार्क में मॉर्निंग वॉक पर दिखते हैं। बिज़नेसमैन हैं, काफ़ी बड़े और संजीदा किस्म के।"

"अच्छा? तो फिर?" अंकिता ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"कुछ नहीं यार, बस यूँ ही," बिंदिया ने बात को संभालते हुए आँखें चुराईं, "सुबह जब वो अपनी गाड़ी से निकल रहे थे, तो रास्ते में नज़र पड़ी। बड़े शांत और अलग से इंसान लगते हैं, एकदम नपे-तुले।”

9

अंकिता ने एक गहरी नज़र बिंदिया पर डाली और शरारत से मुस्कुराते हुए बोली, "कहीं तुझे उन पर कोई क्रश-व्रश तो नहीं हो गया मिस बिंदिया?"

"धत, कुछ भी मत बोल!" बिंदिया ने तुरंत झेंपते हुए उसका हाथ झटका, "चालीस के करीब उम्र होगी उनकी, पापा की उम्र के बराबर! वो बस बड़े इंसान हैं, इसलिए ज़िक्र कर दिया।"

"अच्छा-अच्छा, मज़ाक कर रही थी बाबा," अंकिता हँस पड़ी, "पर तूने कभी बात की उनसे?"

"नहीं, कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी। बस सुबह जब गाड़ियाँ या रास्ते आमने-सामने होते हैं, तो एक अदब से सिर हिल जाता है, बस उतना ही।" बिंदिया ने कॉफ़ी का घूंट भरा, लेकिन उसके दिल की एक अनजानी सी धड़कन अब भी कुछ अलग महसूस कर रही थी।

कॉलेज की छुट्टी की घंटी बजी और दोनों अपनी-अपनी किताबें समेटकर बाहर निकल आईं।

शाम के चार बज चुके थे और आसमान में बादलों की हल्की चादर फैलने लगी थी, जैसे कुछ ही देर में बारिश का मिज़ाज बनने वाला हो। बिंदिया ने ऑटो की तलाश में सड़क की ओर कदम बढ़ाए।

10

ठंडी हवा के झोंके बार बार बिंदिया के दुपट्टे को उड़ा रहे थे। उसने जल्दी से दुपट्टा संभाला और सामने से आ रहे एक ऑटो को हाथ देकर रोक लिया।

दूसरी तरफ, 'रॉयल प्लाज़ा' में शाम की मीटिंग खत्म हो चुकी थी। सप्लायर्स के साथ बातचीत कामयाब रही थी और सतीश अपने केबिन में आकर बैठा ही था।

काँच की बड़ी खिड़की के पार बाहर का मौसम तेज़ी से बदल रहा था। काले बादलों ने आसमान को घेर लिया था और कुछ ही देर में मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

नंदिनी गर्म ब्लैक कॉफ़ी का मग लेकर केबिन में आई।

"सर, मौसम बहुत खराब हो गया है। अगर कोई और ज़रूरी काम न हो, तो आप आज जल्दी निकल जाइए, वरना सड़कों पर पानी भर जाएगा," नंदिनी ने खिड़की की तरफ देखते हुए फिक्रमंद लहजे में कहा।

सतीश ने कॉफ़ी का घूंट भरा और घड़ी की तरफ देखा। पाँच बजने को थे।

उसने एक नज़र बाहर बरसती बारिश पर डाली और मुस्कुराते हुए सिर हिलाया, "हाँ नंदिनी, तुम ठीक कह रही हो।

11

तुम भी बाकी स्टाफ को बोलकर वक्त से निकलवा दो।" सतीश ने अपना लैपटॉप बैग उठाया और पार्किंग की तरफ बढ़ गया।

गाड़ी स्टार्ट करके वह बेसमेंट से बाहर निकला, तो बारिश की मोटी-मोटी बूँदें शीशे से टकराने लगीं। वाइपर तेज़ी से चलने लगे।

सड़क पर गाड़ियों की लंबी कतारें थीं और मूसलाधार बारिश के कारण ट्रैफ़िक बहुत धीमा चल रहा था।

करीब दो किलोमीटर आगे जाने पर अचानक एक जगह सड़क पर पानी भरने से जाम लग गया। सतीश ने गाड़ी रोकी और इंतज़ार करने लगा।

फुटपाथ के किनारे एक शेड के नीचे कुछ लोग बारिश से बचने की कोशिश कर रहे थे।

तभी सतीश की नज़र एक किनारे खड़े एक ऑटो पर पड़ी, जो शायद पानी भरने से बंद पड़ गया था।

ऑटो के अंदर से बिंदिया अपनी किताबों को सीने से सटाए, बेबसी से बाहर देख रही थी। उसके चेहरे पर चिंता और घबराहट साफ़ दिख रही थी।

सतीश ने एक पल के लिए अपनी गाड़ी का शीशा थोड़ा नीचा किया।

12

उसने ध्यान से देखा कितनी मासूम और प्यारी लग रही थी। बारिश की ठंडी फुहारें उसके चेहरे से टकराईं। और उसके और उसके चेहरे पर एक हल्की मुस्कान आ गई, उसने देखा कि कुछ ही पलों की मशक्कत के बाद ऑटो वाले ने किक मारकर ऑटो दोबारा स्टार्ट कर लिया था।

ऑटो धीरे-धीरे आगे बढ़कर भीड़ में ओझल हो गया।

सतीश ने राहत की एक हल्की सांस ली और शीशा ऊपर चढ़ा दिया। ट्रैफ़िक भी अब रेंगते हुए आगे बढ़ने लगा था।

करीब पच्चीस मिनट की धीमी ड्राइविंग के बाद सतीश अपनी कॉलोनी के गेट पर पहुँचा। सिक्योरिटी गार्ड ने सलाम ठोकते हुए बैरियर उठाया।

कार को पोर्च में पार्क करके सतीश अंदर दाखिल हुआ। बड़ा सा आलीशान बँगला हमेशा की तरह एकदम शांत और खाली पड़ा था।

उसने अपना कोट उतारकर सोफ़े पर रखा और खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

सामने वाले घर की पहली मंजिल की बालकनी में हल्की पीली लाइट जल रही थी।

13

कुछ ही पलों में बालकनी का शीशे वाला दरवाज़ा खुला और बिंदिया बाहर आई।

उसके गीले बाल तौलिए में लिपटे हुए थे और उसने घर के सादे, आरामदायक कपड़े पहन रखे थे। हाथ में चाय का एक कप था, जिसकी भाप ठंडी हवा में धीरे-धीरे घुल रही थी।

सतीश अपने कमरे के हल्के अंधेरे में खड़ा उसे देख रहा था। उसके चेहरे पर दिनभर की थकान की जगह एक अजीब सा सुकून था। वह रेलिंग पर हाथ टिकाए, आसमान से गिरती बारिश की बूंदों को निहार रही थी।

सतीश को अचानक लगा कि वह किसी की निजी ज़िंदगी में ताक-झांक कर रहा है। उसने तुरंत नज़रें हटाईं और खिड़की के पर्दे बराबर कर दिए।

उसने खुद को समझाया कि यह सब महज़ एक इत्तेफ़ाक था।

किचन में जाकर उसने खुद के लिए ब्लैक कॉफ़ी बनाई और लैपटॉप खोलकर बैठ गया, लेकिन स्क्रीन पर चलते आंकड़ों के बीच भी बिंदिया का वह मासूम चेहरा बार-बार उभर आता था।

14

उधर बालकनी में खड़ी बिंदिया की नज़रें बार-बार सतीश के बँगले की उसी पहली मंज़िल वाली खिड़की पर उठ रही थीं।
हक़ीक़त तो यह थी कि वह महज़ चाय पीने नहीं, बल्कि जान-बूझकर बालकनी में आई थी। जब से उसने नीचे सतीश की गाड़ी को अंदर आते देखा था, उसके मन में एक अजीब सी बेचैनी थी।
उसे उम्मीद थी कि शायद सतीश खिड़की पर खड़ा दिखेगा।
मगर खिड़की के पर्दे बराबर गिरते देख उसके चेहरे पर एक हल्की सी मायूसी उभर आई। उसने धीरे से चाय की चुस्की ली।
"मैं भी क्या पागलों जैसी हरकतें कर रही हूँ," उसने खुद को ही मन-ही-मन डांटा। कोई प्यार तो था नहीं, बस एक अनजानी सी कशिश थी जो उसे उस संजीदा इंसान की ओर खींच रही थी।
तभी नीचे से उसकी माँ की आवाज़ गूँजी, "बिंदिया, ठंड बढ़ रही है, अंदर आ जा बेटा!" "आई माँ," बिंदिया ने खिड़की की तरफ एक आखिरी नज़र डाली और कप थामे कमरे के अंदर लौट गई।

15

रात गहरी होने लगी और बारिश की फुहारें अब थम चुकी थीं। अगली सुबह जब धूप निकली, तो चारों तरफ बारिश की ताज़गी और धुली हुई हरियाली चमक रही थी।

सतीश अपने रोज़ के नियम के अनुसार ट्रैक सूट पहनकर मॉर्निंग वॉक के लिए पार्क पहुँचा। ठंडी हवा में दौड़ लगाने के बाद वह एक बेंच के पास रुका ही था कि सामने से रामकिशोर जी आते दिखाई दिए।

"अरे सतीश बाबू! शुभ प्रभात," रामकिशोर जी ने हाथ जोड़कर गर्मजोशी से अभिवादन किया।

"शुभ प्रभात अंकल जी, कैसे हैं आप?" सतीश ने भी बहुत आदर से सिर झुकाते हुए पूछा।

"बस सब बढ़िया। कल की बारिश ने तो पूरा शहर रोक दिया था। आप ठीक-ठाक पहुँच गए थे?"

"हाँ अंकल, थोड़ा ट्रैफ़िक था पर वक्त से पहुँच गया," सतीश ने सहजता से जवाब दिया।

बातें करते-करते रामकिशोर जी मुस्कुराए, "हमारी बिंदिया भी कल जाम में फंस गई थी, बेचारी डर गई थी। कह रही थी कि आपके जैसी ही कोई बड़ी गाड़ी पास से गुज़री थी।"

16

सतीश का दिल एक पल के लिए ज़ोर से धड़का, पर चेहरे पर उसने वही शांत गंभीरता बनाए रखी।

"हाँ, कल ट्रैफ़िक बहुत ज़्यादा था अंकल," सतीश ने संभलकर कहा, फिर दोनों अपनी-अपनी वॉक पूरी करके घरों की ओर लौट पड़े।

घर पहुँचकर नाश्ते की मेज़ पर रामकिशोर जी ने अपनी पत्नी और बिंदिया के सामने सतीश की तारीफ़ शुरू कर दी।

"बड़ा ही सुलझा हुआ और संस्कारी इंसान है सतीश बाबू। इतना बड़ा बिज़नेस, इतनी दौलत, पर ज़रा भी घमंड नहीं। बड़ों से बात करने का अदब ही अलग है उसका।"

किचन से चाय लाती बिंदिया के कान इन शब्दों पर ठिठक गए।

पापा के मुँह से सतीश की तारीफ़ सुनकर उसके चेहरे पर एक अनजानी सी चमक तैर गई, जिसे उसने प्लेट सजाने के बहाने छुपा लिया।

करीब दो घंटे बाद जब दोनों अपने-अपने काम के लिए निकले, तो मुख्य सड़क पर भारी ट्रैफ़िक जाम था।

17

सतीश ने ड्राइवर को गाड़ी आगे निकालने को कहा और खुद पैदल ही पास की पुरानी गली के शॉर्टकट में मुड़ गया।

उधर बिंदिया भी जाम देखकर रिक्शे से उतरी और कॉलेज जल्दी पहुँचने के लिए उसी गली में तेज़ी से आगे बढ़ने लगी।

वह संकरी, शांत गली पुरानी इमारतों के साए में लिपटी हुई थी।

अभी दोनों गली के बीच तक ही पहुँचे थे कि आसमान में ज़ोर से बिजली कड़की और अचानक बादलों ने मूसलाधार पानी बरसाना शुरू कर दिया।

बिंदिया ने अपने बैग को सिर पर रखा और भीगने से बचने के लिए सामने दिखी एक पुरानी चाय की टपरी की ओर भागी।

उसी वक्त दूसरी तरफ से कदम बढ़ाते हुए सतीश भी उसी टीन की छत वाले शेड के नीचे आकर रुका।

दोनों ने एक साथ शेड के नीचे सांस ली और अनजाने में एक-दूसरे की ओर देखा।

नज़रें टकराते ही बिंदिया ठिठक गई, और सतीश की आँखों में भी एक पल के लिए हैरानी तैर गई।

18

खौलती चाय की खुशबू और गिरती बूँदों के बीच, पहली बार दोनों के बीच की दूरी महज़ दो कदम की रह गई थी।

बिंदिया की साँसें तेज़ थीं और कुर्ते पर बारिश की कुछ बूँदें मोतियों की तरह चमक रही थीं। उसने झिझकते हुए नज़रें झुका लीं।

सतीश ने अपनी कमीज़ की आस्तीन को ठीक किया और एक नपी-तुली, गंभीर आवाज़ में खामोशी तोड़ी, "आप ठीक हैं?"

बिंदिया ने धीरे से सिर उठाया। सतीश की आँखों में वही गरिमा थी जो उसने हमेशा देखी थी।

"जी... जी, बिल्कुल," बिंदिया के लबों से धीमी सी आवाज़ निकली, "अचानक बारिश आ गई तो..."

"हाँ, मौसम का मिज़ाज कुछ ऐसा ही हो गया है आज," सतीश ने सहजता से कहा, फिर टपरी वाले की ओर मुड़कर बोला, "भैया, दो कप अदरक वाली कड़क चाय बना दीजिए।"

बिंदिया ने सकपका कर देखा, "नहीं, उसकी ज़रूरत नहीं थी सतीश जी..."

19

"भीग चुकी हैं आप, ठंड लग जाएगी," सतीश ने बहुत ही शांत और स्वाभाविक लहजे में टोकते हुए कहा, "चाय पी लेंगी तो थोड़ा बेहतर लगेगा।"

सतीश के मुँह से अपनी परवाह सुनकर बिंदिया के दिल के किसी कोने में एक हल्की सी मीठी सिहरन दौड़ गई।

उसने कुछ नहीं कहा, बस धीरे से अपनी नज़रें झुका लीं।

टपरी वाले ने मिट्टी के दो कुल्हड़ों में खौलती हुई चाय छानी और आगे बढ़ा दी। भाप के साथ अदरक और इलायची की महक हवा में फैल गई।

सतीश ने एक कुल्हड़ उठाकर बहुत अदब के साथ बिंदिया की तरफ बढ़ाया।

कुल्हड़ थामते वक्त बिंदिया की उँगलियाँ सतीश के पोरों से छू गईं। उस अनजाने से हल्के स्पर्श ने बिंदिया के रोंगटे खड़े कर दिए।

उसने तुरंत चाय के गर्म कुल्हड़ को दोनों हथेलियों में थाम लिया ताकि ठंड से कांपते हाथ संभल सकें।

"कॉलेज जा रही थीं आप?" सतीश ने चाय की चुस्की लेते हुए एकदम सहज अंदाज़ में पूछा।

20

"जी... बी.कॉम सेकंड ईयर है," बिंदिया ने झिझकते हुए जवाब दिया, "ट्रैफ़िक ज़्यादा था तो सोचा शॉर्टकट ले लूँ, पर बारिश ने सब बिगाड़ दिया।"

सतीश के होंठों पर एक संजीदा, धीमी सी मुस्कान तैर गई, "कभी-कभी अनचाहे रास्ते भी कुछ पलों का सुकून दे जाते हैं।"

बिंदिया ने धीरे से नज़रें उठाकर सतीश को देखा। उस भारी, परिपक्व आवाज़ में एक अजीब सा ठहराव था जिसने उसके दिल की धड़कनों को एक लय दे दी थी।

"जी... शायद आप ठीक कह रहे हैं," बिंदिया ने धीमे स्वर में कहा और कुल्हड़ से चाय की एक और चुस्की ली।

चाय खत्म होते-होते आसमान से बरसती मूसलाधार बारिश अब हल्की फुहारों में बदल चुकी थी।

सतीश ने जेब से बटुआ निकालकर टपरी वाले को पैसे दिए और फिर बिंदिया की ओर देखा।

"बारिश अब हल्की हो गई है, पर सड़कों पर पानी भरा होगा। अगर आपको ऐतराज़ न हो, तो मेरी गाड़ी आगे ही है, मैं आपको कॉलेज के गेट तक छोड़ देता हूँ," सतीश ने बेहद शालीन लहजे में कहा।

बिंदिया झिझक गई, "नहीं सतीश जी, आप क्यों तकलीफ़ करेंगे... मैं ऑटो ले लूँगी।"

"इसमें तकलीफ़ कैसी? रामकिशोर जी से रोज़ मिलता हूँ, एक पड़ोसी और बड़े होने के नाते इतना फ़र्ज़ तो बनता ही है," सतीश के होंठों पर हल्की सी आत्मीय मुस्कान आई, "और वैसे भी, इस कीचड़ में आपको ऑटो मिलना मुश्किल होगा।"

सतीश के इस अधिकार भरे अपनेपन के आगे बिंदिया मना नहीं कर सकी और उसने धीरे से सहमति में सिर हिला दिया। दोनों साथ चलते हुए गली के मोड़ पर पहुँचे जहाँ सतीश की बड़ी काली गाड़ी खड़ी थी।

ड्राइवर ने तुरंत उतरकर पीछे का दरवाज़ा खोला, पर सतीश ने खुद आगे बढ़कर बिंदिया के लिए अगला दरवाज़ा खोल दिया। बिंदिया संकोच में सिमटती हुई आगे की सीट पर बैठ गई। गाड़ी के अंदर की भीनी खुशबू और एयर कंडीशनर की हल्की ठंडक ने उसके भीगे बदन को राहत दी।

22

सतीश दूसरी तरफ से आकर बैठा और उसने ड्राइवर से धीमे स्वर में कहा, में इन्हें इनके कॉलेज छोड़ कर आता ही तुम रिक्शा लेके ऑफिस चले जाओ।

बिंदिया ने धीरे से बैग को अपनी गोद में समेटा, उसकी धड़कनें अब भी थोड़ी तेज़ थीं।

ड्राइवर के उतरते ही सतीश ने स्टीयरिंग व्हील थामी और गाड़ी को आहिस्ता से सड़क पर बढ़ा दिया।

कार के अंदर दोनों के बीच एक नपी-तुली, शांत खामोशी फैल गई।

सतीश ने उस सन्नाटे को तोड़ते हुए बहुत ही सहज भाव से पूछा, "बी.कॉम के बाद आगे क्या सोचा है आपने?"

बिंदिया ने झिझकते हुए धीरे से कहा, "एम.कॉम करने का मन है, फिर बैंकिंग या फाइनेंस में कोई अच्छी जॉब।"

"काफ़ी अच्छा फ़ैसला है," सतीश ने नज़रें सड़क पर रखते हुए कहा, "फाइनेंस की फील्ड बहुत बड़ी है। अगर बेसिक्स मज़बूत हों, तो रास्ते बहुत आसानी से खुलते हैं।"

सतीश की आवाज़ का अपनापन और अनुभव बिंदिया के मन के संकोच को पिघला रहा था।

23

उसे पहली बार महसूस हुआ कि सतीश सिर्फ एक कामयाब कारोबारी ही नहीं, बेहद संवेदनशील इंसान भी हैं।

बिंदिया ने हिम्मत जुटाकर पूछा, "आप हमेशा इतने शांत और गंभीर रहते हैं?"

सतीश के लबों पर एक हल्की सी मुस्कान उभरी, "ज़िंदगी की ज़िम्मेदारियों ने शायद ठहराव सिखा दिया है। कभी-कभी इंसान काम में इतना डूब जाता है कि हल्का होना भूल जाता है।"

"लेकिन कभी-कभी खुद के लिए भी वक्त निकालना चाहिए," बिंदिया के मुँह से अनजाने में ही निकल गया।

सतीश ने एक पल के लिए मुड़कर उसे देखा। उसकी आँखों में एक नया, अनजाना सा अपनापन था।

गाड़ी कॉलेज के मुख्य गेट के सामने आकर रुक गई।

"शुक्रिया सतीश जी, मेरी वजह से आपको तकलीफ़ हुई," बिंदिया ने गाड़ी का दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

"तकलीफ़ नहीं, अच्छा लगा," सतीश ने बहुत धीमे और संजीदा स्वर में कहा।

बिंदिया के गालों पर हल्की लाली छा गई। उसने धीमे से सिर झुकाया और कॉलेज के अंदर कदम बढ़ा दिए।

24

बिंदिया को कॉलेज छोड़कर सतीश जब 'रॉयल प्लाज़ा' पहुँचा, तो उसके चेहरे पर एक अजीब सा, अनजाना सुकून था।

ड्राइवर पहले ही रिक्शे से पहुँच चुका था। सतीश जैसे ही अपने केबिन में दाखिल हुआ, नंदिनी रोज़ की तरह बिना चीनी वाली अदरक की चाय और कुछ ज़रूरी फाइल्स लेकर अंदर आई।

फाइल टेबल पर रखते हुए नंदिनी की पारखी नज़रें सतीश के चेहरे पर टिक गईं।

बरसों से सतीश के साथ काम करते हुए उसने हमेशा उसे गंभीर, थका हुआ और सिर्फ काम में उलझा देखा था।

मगर आज उसके चलने के अंदाज़ में एक ताज़गी थी और होंठों पर अनजाने में ही एक हल्की मुस्कान ठहरी हुई थी।

"सर, ड्राइवर कह रहा था कि आप खुद ड्राइव करके आए हैं? सब ठीक तो है?" नंदिनी ने बहुत सहज आवाज़ में पूछा।

सतीश ने संभलते हुए चश्मा उतारा, "हाँ... बस ऐसे ही। रास्ते में एक ज़रूरी काम था।"

25

नंदिनी ने कुछ नहीं कहा, बस चुपचाप एक गहरी नज़र अपने बॉस पर डाली।

वह जानती थी कि सतीश अपनी निजी भावनाएं कभी ज़ाहिर नहीं होने देता, मगर आज उस खामोश चेहरे के पीछे कोई नई हलचल ज़रूर थी जिसे वह पहली बार महसूस कर रही थी।

सतीश ने चाय का घूंट भरा और फाइलों की तरफ ध्यान लगाने की कोशिश की, मगर उसका मन बार-बार कॉलेज के गेट पर मुड़कर देखने वाली बिंदिया के उस भीगे चेहरे पर अटक रहा था।

नंदिनी ने केबिन से बाहर निकलते हुए एक बार फिर मुड़कर देखा।

सतीश अपने चश्मे के फ्रेम को उंगलियों से सहलाते हुए खिड़की के बाहर शून्य में देख रहा था—यह वही इंसान था जो दिन में एक मिनट भी खाली नहीं बैठता था।

नंदिनी के चेहरे पर एक शांत सी समझदारी भरी मुस्कान आई, उसने केबिन का कांच का दरवाज़ा आहिस्ता से बंद कर दिया।

26

नंदिनी के जाने के बाद भी सतीश देर तक अपनी रिवॉल्विंग चेयर पर गुमसुम बैठा रहा।

सामने खुली फाइलों के आंकड़े जैसे धुंधले पड़ गए थे। दिमाग में बार-बार वही संकरी गली, चाय की टपरी और कार में बिंदिया की वह मासूम आवाज़ गूँज रही थी।

"मैं यह क्या सोच रहा हूँ?" सतीश ने खुद को टोकते हुए दोनों हाथों से चेहरा ढक लिया।

चालीस की उम्र में पहुँचकर, ज़िंदगी के तमाम उतार-चढ़ाव देखने के बाद, उसने कभी नहीं सोचा था कि किसी बीस साल की लड़की की एक नज़र उसके बरसों के अनुशासन को हिला देगी।

उधर कॉलेज की कैंटीन में बिंदिया अपनी सहेली अंकिता के साथ बैठी थी।

समोसे की प्लेट सामने रखी थी, पर बिंदिया की उंगलियाँ बस कोल्ड ड्रिंक के स्ट्रॉ को घुमा रही थीं।

"कहाँ खोई है तू आज? जब से आई है, क्लास में भी प्रोफेसर की जगह खिड़की के बाहर ताक रही थी," अंकिता ने उसे कोहनी मारते हुए छेड़ा।

27

बिंदिया झेंप गई, फिर धीमी आवाज़ में बोली, "अंकिता, कभी ऐसा हुआ है कि किसी बहुत शांत इंसान की खामोशी भी दिल में शोर मचाने लगे?"

अंकिता ने भौंहें सिकोड़कर उसे देखा, "मतलब? कोई मिला है क्या?"

"छोड़ ना, कुछ नहीं... बस ऐसे ही," बिंदिया ने मुस्कुराते हुए बात टाल दी और कोल्ड ड्रिंक की चुस्की लेने लगी।

दिन बीत गया और शनिवार की शाम खामोशी से रात के आगोश में समा गई।

अगली सुबह इतवार था।

सतीश के बड़े, पुराने बँगले के अहाते में मीठी धूप फैली हुई थी।

सतीश बरामदे की आरामकुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ रहा था।

तभी बँगले के लोहे के गेट की हल्की सी चरमराती आवाज़ हुई।

सतीश ने चश्मा नीचे कर देखा—सामने पीले सूट में बिंदिया हाथ में एक स्टील का टिफिन लिए मुस्कुराती हुई सीढ़ियाँ चढ़ रही थी।

कहानी अभी बाकी है...

क्या 20 साल की बिंदिया की अल्हड़ मोहब्बत 40 साल के संजीदा सतीश के बरसों के ठहराव को पिघला पाएगी?

या फिर उम्र का यह फासला और समाज की मर्यादाएँ इस रिश्ते को एक दर्दनाक मोड़ पर लाकर छोड़ देंगी?

सतीश और बिंदिया की इस अनकही, दिल को छू लेने वाली रूहानी प्रेम कहानी का पूरा सफर जानने के लिए आज ही नीचे buy बटन दबा कर पूरी ई-बुक पढ़ें,

सिर्फ 120/- में।